व्याख्यान - 18

बी॰ए॰ I (स्नातक प्रथम खण्ड कक्षा/विज्ञान वाणिज्य)

NRB

रश्मिरथी
टिप्पणियाँ
षष्ठ सर्ग

उदग्र = ऊँचा, पयोवृत्त। द्रोह-रव = द्रोह रूपी जंगली आग।
अवशंसी = निन्दक।
विहित मित्र = विधान द्वारा बनाये गये मित्र।
संकटापन्न जीवन .... महायान - विपत्तियों से घिरे मनुष्य के जीवन-जैसा ही (कौरवों का) जहाज समुद्र के बीच है।
स्वव्रत = अर्जुन से युद्ध ही कर्ण का व्रत था।
तूर्ण = शीघ्र। प्रसन्न = उन्मुक्त, खुला हुआ।
रणधार = यम। कीर्ण = बिखरे हुए।
विशीर्ण = सूखे। अप्रतिहत = जिसे रोकनेवाला कोई न हो, सुपर्ण = बड़े शिकारी पक्षी। गरुड़
कुड्मल = अधखिली कली।
किंशुक = खिले पलाश-सी लाल।
बह चली मनुज ....धोकर = मनुष्य-रक्त पशुओं के पाँव धोने लगा। मनुष्यता का अनादर हुआ। क्या कहें धर्म.... चलो = धारणा यह है कि महाभारत में अन्याय केवल कौरवों ने किया। यहाँ संकेत है कि अन्याय दोनों ने किया। अन्तक = यम।
ज्यायान = बहुत बूढ़ा, जिसकी कमर झुकी हो, विपर्यस्त = कुछ का कुछ।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date : / /

सिर कटा जयद्रथ ..... चूर्ण हुआ = जयद्रथ के पिता को शंकर से वरदान मिला था कि जिसके द्वारा जयद्रथ का मस्तक पृथ्वी पर गिरे, उसके मस्तक के सौ टुकड़े हो जाए। भगवान श्रीकृष्ण को यह ज्ञात था। जिस समय अर्जुन ने जयद्रथ का वध किया, उस समय उसका पिता कुरुक्षेत्र से दूर तप कर रहा था। अर्जुन ने जयद्रथ का मस्तक इस प्रकार उड़ा दिया कि वह उसके पिता की गोद में जा गिरा। जयद्रथ का पिता, स्वभावतः घबराकर खड़ा हो गया। जयद्रथ का मस्तक उसके पिता की गोद से भूमि पर गिरा, अतः बेचारे तपस्वी के मस्तक के सौ टुकड़े हो गये।

हाँ यह भी हुआ .... योगनिरत = भूरिश्रवा सात्यकि को पछाड़ कर उसकी छाती पर चढ़ बैठे, कि भगवान कृष्ण ने अर्जुन को इशारा किया, 'अर्जुन, तुम्हारा शिष्य अब मरनेवाला है।' अर्जुन ने तुरन्त बाण से भूरिश्रवा की बाँह काट डाली। इस अन्याय के विरोध में भूरिश्रवा शस्त्र तजकर तपस्या में बैठ गये। तभी सात्यकि ने धर्माधर्म का विचार किए बिना भूरिश्रवा की गरदन काट ली।

मुनि - व्रत = तपस्या।

विग्रह = शत्रु का राज्य लूटकर या जलाकर नष्ट कर देनेवाला युद्ध।

ग्रथन = गूँथना, जोड़ मिलाना।

जीवन के परम ... जाता है = जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य सुख है। सुख की प्राप्ति अधर्म से भी हो सकती है, किन्तु अधर्म त्याज्य है। धर्म में प्रधानता सुख की नहीं, साधन की है। प्रध्वंस = विनाश।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date : / /

तब भी ... अंगारों को = जैन महात्माओं, बुद्ध, ईसा और गाँधी की शिक्षा के अनुसार युद्ध सदा निन्दनीय है। यह मनुष्य का नहीं, पशु का स्वभाव है, अतएव मनुष्य को चाहिए कि अपने विवाद का हल वह शान्तिमय उपायों से निकाले। दूसरी विचारधारा के अनुसार अच्छे उद्देश्य की प्राप्ति यदि शान्ति से सम्भव न हो, तो युद्ध अनिवार्य है। प्रस्तुत पंक्तियों का भाव यह है कि युद्ध, किसी भी अवस्था में धर्म नहीं है। धर्म फूल है और युद्ध अंगार। दोनों को एक ही माला में गूँथना सम्भव नहीं।

वासना - वह्नि से ... संयुग कोमल = युद्ध की स्थिति अतृप्त वासना की अधीरता के कारण आती है जो एक ज्वाला है। इससे कोमलता की आशा नहीं की जा सकती।
संयुग = युद्ध। विजय - द्वन्द्व = जीत का संघर्ष। प्रतिभट = प्रतियोगी वीर।
द्वैरथ - रण = केवल दो रथियों का युद्ध।
एकघ्नी = इन्द्र से प्राप्त अस्त्र जो एक ही व्यक्ति का हनन कर लौट जानेवाला था।
एकघ्निहव्य = एकघ्नी का शिकार।
घटोत्कच = हिडिम्बा नामक एक राक्षसी से उत्पन्न भीम का भयानक वीर पुत्र।
किमाकार = अद्भुत और भयानक आकारवाला। अनी = सेना।

है क्या .... घोर = राक्षस माया - युद्ध करते थे, अनेक हो जाना, अन्धकार फैला देना, अस्थि और रक्त बरसा देना आदि - इसी माया के खेल थे। घटोत्कच रात

Page No.:
Date : / /

में युद्ध करने आया था और रात में राक्षसों का बल बढ़ जाता था।

अजस्त्र - शर - वृष्टि - निरत = लगातार बाण बरसाने में संलग्न। विवर्ण = फीका पड़ा हुआ।

सुन सहम उठा राधेय - कर्ण एकघ्नी अर्जुन-हनन के लिए जुगाये था। दुर्योधन ने घटोत्कच पर ही इसे व्यय कराना चाहा, इससे कर्ण स्तम्भित रह गया। स्वसा = बहन। घातकता = मृत्यु।

अनल - रसा = आग - सी, मजा चखा देनेवाली, निश्चित नाशक। क्या हुई... विगत संशय = कृष्ण को संशय था कि कर्ण अर्जुन पर एकघ्नी चला बैठा तो अर्जुन की रक्षा कैसे होगी? अब वह संशय जाता रहा। प्रीत = प्रसन्न।

वलयित = घिरा हुआ।

जयघोष की झंकार से ... खोया हुआ = विजय से निराश, मन से उस जगह पहुँचा हुआ, जहाँ विजय नहीं, कोई और चिन्ता थी।

चमू = सेना।

निर्मला कुमारी
06-05-2020

Scanned with CamScanner